

भाज्य पुं. (तत्.) 1. भाग, अंश, हिस्सा, देय 2. उत्तराधिकार, दाय, पैतृक-संपत्ति से प्राप्य 3. गणि. वह संख्या, राशि अथवा व्यंजक जिसमें किसी संख्या, राशि, अथवा व्यंजक से भाग दिया गया हो 4. लाभांश वि. (तत्.) विभाग करने योग्य, विभाज्य। dividend

भाज्यता स्त्री. (तत्.) अंशों में विभाजित किए जा सकने की योग्यता गणि. संख्या आदि में पूर्णतः विभाजित हो जाने की योग्यता। divisibility

भाज्य संख्या स्त्री. (तत्.) गणि. वह संख्या जिसके दो अथवा अधिक अभाज्य गुणनखंड हों।

भाट पुं. (तद्.) 1. गड़ढा, भूमि के अंदर एक बड़े बिल के समान किया गया ऐसा गड़ढा जिसमें गीदड़, लोमड़ी आदि वन्य पशु निवास करते हैं 2. राजाओं का गुणगान करने वाले, चारण, बंदी 3. चापलूस व्यक्ति, खुशामदी आदमी।

भाटक पुं. (तत्.) 1. भाड़ा, किराया 2. पारिश्रमिक, मजदूरी।

भाटा पुं. (देश.) 1. समुद्र में आने वाले ज्वार का वेगपूर्वक उतार, समुद्री लहर का उतार, समुद्र के चढ़ाव का उतरना 2. पानी का उतार की ओर जाना, समुद्र में मिलने वाली नदियों में होने वाला पानी का उतार लाक्ष. क्षय, हास, उतार।

भाड़ पुं. (तद्.) भट्ठी, जिसमें भड़भूजा चना, मक्का, जौ आदि अनाजों को बालू में भूनता है लाक्ष. ऐसा स्थान जहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है (देश.) भटकटैया नामक पौधा जिसके पुष्प पीले वर्ण के तथा कटोरे के समान आकार के होते हैं।

भाड़ा पुं. (तद्.) 1. घर, दुकान आदि का किराया 2. रेल, बस आदि का उपयोग करने पर दिया जाने वाला किराया।

भाण पुं. (तत्.) 1. काव्य. संस्कृत नाटकों का एक भेद, हास्य रस प्रधान एकांकी जिसमें एक ही पात्र आकाश भाषित के सहारे वार्तालाप करता हुआ घटनाओं को प्रदर्शित कर दर्शकों का मनोरंजन करता है 2. व्याज, मिस।

भात पुं. (तद्.) 1. पानी में उबाल कर पकाया गया चावल 2. विवाह की एक प्रथा जिसमें विवाह के दूसरे दिन पक्के खाने (पूरी, कचौड़ी आदि) के स्थान पर कच्ची रसोई (रोटी, चावल, दाल अथवा कढ़ी आदि) का विशेष भोजन परोसा जाता है। इस प्रथा को 'भात-भोज' कहा जाता है 3. बहिन के पुत्र अथवा पुत्री के विवाह के समय भाइयों द्वारा दिए जाने वाले कुछ विशिष्ट उपहार देने की प्रथा 4. उक्त अवसर पर दिए जाने वाले उपहार 5. उक्त अवसर पर गाए जाने वाले कुछ विशेष लोक गीत।

भाति स्त्री. (तत्.) 1. द्युति, दीप्ति, चमक 2. शोभा, कांति 3. ज्ञान।

भाथी स्त्री. (तद्.) 1. लौहकार की धौंकनी जिससे आग प्रज्वलित की जाती है 2. तूणीर, तरकस।

भादों पुं. (तद्.) श्रावण (सावन) के पश्चात् आने वाला मास, भाद्र।

भाद्रपद पुं. (तत्.) श्रावण (सावन) और आश्विन (कुआर) के मध्य का मास टि. वैशाख को पहला मास मानकार भाद्रपद पाँचवा महीना है, भाद्रपद की पूर्णिमा को भाद्रपदी या भाद्री कहते हैं।

भाद्रपदा पुं. (तत्.) ज्यो. 27 नक्षत्रों में इनकी गणना होती है, इसके पूर्वा भाद्रपदा तथा उत्तरा भाद्रपदा दो भाग हैं, भाद्रपद मास का नाम इन्हीं नक्षत्रों के आधार पर है क्योंकि इस समय पृथ्वी इसी दिशा में होती है (सूर्य को केंद्र मानते हुए)।

भान पुं. (तत्.) 1. सूर्य 2. प्रकाश 3. किरण 4. चमक 5. आभास जैसे- इस बात का भान पहले ही हो गया था 6. ज्ञान।

भानजा पुं. (तद्.) बहन का पुत्र, भागिनेय, स्त्रीलिंग रूप- भानजी, अर्थात् बहन की पुत्री।

भानना स.क्रि. (देश.) 1. भंग करना, तोड़ना 2. नष्ट करना, मिटाना 3. दूर करना 4 मिटाना 5. विचार करना 6. कहना।

भानमती स्त्री. (तद्.) जादूगरनी, ऐसी महिला जो चमत्कार कर सकती हो टि. जनश्रुति के अनुसार